विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ ,लक्खीसराय

वर्ग-अष्टम

विषय – हिन्दी

।। अभ्यास-सामग्री ।।

पाठ –

बाट की पहचान

महत्वपूर्ण निर्देश – दी गई सामग्री परीक्षोपयोगी है ।

बटोही को चलने के पूर्व बाट की पहचान करने की सलाह कवि किस अभिप्राय से देता है?

उत्तर :

प्रस्तुत कविता में कवि बच्चन ने पथिक के माध्यम से यह प्रेरणा दी है कि मनुष्य को अपने पथ की पहचान स्वयं करनी चाहिए, क्योंकि जीवन के मार्ग में अपने ही अनुभव सबसे श्रेष्ठ होते हैं। इस मार्ग का निर्धारण किसी दूसरे उपदेश या पुस्तकों को पढ़कर नहीं किया जा सकता है। (UPBoardSolutions.com) कुछ मनुष्य ऐसे अवश्य रहे हैं, जो अपने पथ पर अपने कदमों के निशान छोड़ गये। हैं। हमें उनसे अवश्य कुछ सहायता प्राप्त हो सकती है।

प्रश्न 2.

यात्रा सुगम और सफल होने के लिए कवि क्या सुझाव देता है?

उत्तर :

कवि कहते हैं कि जीवन के मार्ग का निर्धारण करके उस पर दृढ़ निश्चय के साथ चल पड़ना ही श्रेयस्कर है। अनिश्चय की स्थिति में बार-बार मार्ग बदलने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाती। कवि कहते हैं कि किसी भी मनुष्य का यह सोचना कि पथ के निर्धारण से उसे ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, गलत है। पूर्व के सभी मनुष्यों को भी अपने पथ का निर्धारण करना पड़ा था और बाधाएँ उनके सामने भी आयी थीं।

प्रश्न 3.

यात्रा में विघ्न-बाधाओं को किन प्रतीकों से बतलाया गया है?

उत्तर :

बाधाओं और कठिनाइयों के लिए कवि ने नदी, पर्वत, गुफाओं और काँटों आदि को प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है।

प्रश्न 4.

'स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो, सत्य का भी ज्ञान कर ले' कहने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर :

कवि के कहने का भाव यह है कि सुख के स्वप्नों में न डूबकर जीवन की वास्तविकताओं का भी ज्ञान होना आवश्यक है, तभी उन्नति का पथ प्रशस्त हो सकता है जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ने से पूर्व उचित लक्ष्य या मार्ग का भी निर्धारण कर लेना चाहिए।

प्रश्न 5.

कवि'आदर्श और यथार्थ' के समन्वय पर किन पंक्तियों पर बल देता है और उसके लिए किस वस्तु का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है?

प्रश्न 5.

कवि'आदर्श और यथार्थ' के समन्वय पर किन पंक्तियों पर बल देता है और उसके लिए किस वस्तु का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है?

उत्तर :

रास्ते का एक काँटा। पाँव का दिल चीर देता। राह के काँटे चुभकर बताते हैं कि सपने तो बुनें, लेकिन सच्चाई से इंकार नहीं करें, तभी जीवन में सफलता मिल सकती है। और आनन्द के फूल खिल सकते हैं। कवि की यही शिक्षा है।

प्रश्न

सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाइए :

(क) 'पूर्व' के दो भिन्न अर्थ हैं :
(i) पश्चिम, पहले ○ (ii) पहले, एक दिशा ○
(iii) एक नाम, दिशा ○ (iv) कोई नहीं ○

(ख) 'सरिता' के सही पर्याय हैं :
(i) सरोवर, तटिनी ○ (ii) नदी, तटिनी ○
(iii) सलिला, सर ○ (iv) तट, नदी ○

(ग) 'बटोही जाता है' में क्रिया का काल है :
(i) भूत काल ○ (ii) भविष्यत् काल ○
(iii) वर्तमान काल ○ (iv) कोई भी नहीं ○

(घ) 'लाल' शब्द की भाववाचक संज्ञा है :
(i) लालीपन ○ (ii) ललित ○
(iii) लालत्व ○ (iv) लालिमा ○

इन शब्दों के दो-दो अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

पूर्व, बाट, अर्थ, मत, मन

इन शब्दों के तीन-तीन पर्याय लिखिए :

हृदय .... पथ ....

पर्वत .... बाग ....

राही .... वन ....

राही जाता है। राही जाता था। राही जाएगा।

उपर्युक्त वाक्यों में 'है' से वर्तमान समय का बोध होता है। 'था' से बीते समय का और 'जाएगा' से आने वाले स
बोध होता है।

यह समय तीन रूपों में घटित हो रहा है - वर्तमान काल, भूत काल, भविष्यत् काल

इन क्रियाओं का तीनों रूपों से वाक्यों में प्रयोग करें :

चलना, पहचानना, बोलना, बढ़ना, मिलना

5. इन विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :

बुरा ..... सुंदर ..... अच्छा .....

भला ..... सरल ..... सफल .....